अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : जैनागम स्तोक वारिधि – छठी कक्षा (10 जनवरी, 2016)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र. 1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए– 10X1=10

(a) 98 बोल के बासठिये में नरक का अन्तिम बोल है।

क. 31 वाँ ख. 24 वाँ

ग. 23 वाँ घ. 25 वाँ ( )

(b) अभव्य जीव में योग पाये जाते हैं।

क. 15 ख. 11

ग. 10 घ. 13 ( )

(c) पंचेन्द्रिय जीव शोक मोहनीय कर्म का उत्कृष्ट बंध करते हैं।

क. 50 सागर ख. अन्तः कोटा कोटी सागर

ग. 1000 सागर घ. 20 कोटा कोटी सागर ( )

(d) एकेन्द्रिय जीव स्त्रीवेद कर्म प्रकृति की उत्कृष्ट स्थिति बांधता है।

क. 1 सागर के 3/14 भाग ख. 25 सागर के 3/14 भाग

ग. अन्तर्मुहूर्त्त घ. अन्तः कोटा कोटी सागर ( )

(e) सम्मति स्थावर का स्वभाव है–

क. शीतलता ख. उष्ण

ग. बाजना घ. कठोर ( )

(f) देवता की कुल कोड़ी है–

क. 53 लाख ख. 2 लाख

ग. 26 लाख घ. 12 लाख ( )

(g) तमा दिशा कहलाती है–

क. ऊर्ध्व ख. पश्चिम

ग. उत्तर घ. नीची दिशा ( )

(h) वायुकाय के जीव सबसे थोड़े हैं–

क. पूर्व दिशा में ख. उत्तर दिशा में

ग. पश्चिम दिशा में घ. दक्षिण दिशा में ( )

(i) नवीन साधु का जघन्य विरह है–

क. 6 माह ख. 4 माह

ग. 15 दिन घ. 1 समय ( )

(j) सिद्ध गति का उत्कृष्ट विरह है–

क. 6 माह　　ख. 1 माह

ग. 15 दिन　　घ. 1 समय　　(　　)

प्र. 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हाँ अथवा ना में दीजिए–　　10X1=10

(a) सिद्ध भगवन्त का 74 वाँ बोल है। .....

(b) छद्मस्थ जीव में गुणस्थान 1 से 12 तक होते हैं। .....

(c) सम्मूर्च्छिम मनुष्य में 4 उपयोग होते हैं। .....

(d) 97 वाँ बोल श्रेणि में विरह की अपेक्षा अशाश्वत है। .....

(e) एकेन्द्रिय जीव में 5 योग पाये जाते हैं। .....

(f) ईर्यापथिकी सातावेदनीय की स्थिति दो समय की है। .....

(g) अति जघन्य व अति विशुद्ध परिणामों में ही आयु का बंध होता है। .....

(h) 15 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर 150 वर्ष का अबाधाकाल होता है। .....

(i) सात कर्मों में यह सामान्य नियम है कि उत्कृष्ट स्थिति का बन्ध संक्लिष्ट परिणामों में होता है। .....

(j) आयुष्य बंध करने में कम से कम एक मुहूर्त्त लगता है। .....

प्र. 3 निम्नलिखित की जोड़ियाँ मिलान कर सही उत्तर लिखिए–　　10X1=10

(a)	असातावेदनीय	(क) 20 कोटा कोटी सागरोपम	.....
(b)	मिश्र मोहनीय	(ख) 10 कोटा कोटी सागरोपम	.....
(c)	औदारिक शरीर	(ग) 40 कोटा कोटी सागरोपम	.....
(d)	यश कीर्ति नाम	(घ) अन्तर्मुहूर्त्त	.....
(e)	साधारण नाम	(च) अन्तः कोटा कोटी सागरोपम	.....
(f)	खट्टा रस	(छ) 30 कोटा कोटी सागरोपम	.....
(g)	अप्रत्याख्यानी मान	(ज) 12.5 कोटा कोटी सागरोपम	.....
(h)	आहारक अंगोपांग	(झ) 12 कोटा कोटी सागरोपम	.....
(i)	न्यग्रोध परिमंडल	(य) 16 कोटा कोटी सागरोपम	.....
(j)	अर्द्धनाराच संहनन	(र) 18 कोटा कोटी सागरोपम	.....

प्र. 4 मुझे पहचानो– 10X2=20

(a) मैं 88 वाँ बोल हूँ और भव सिद्धिया जीवों से अनन्त गुणा हूँ। .....

(b) 98 बोल में से मेरा ही बोल ऐसा है, जिसमें 6 जीवस्थान व 14 गुणस्थान पाये जाते हैं। .....

(c) मैं कर्म बंधने के बाद अमुक काल तक किसी भी प्रकार के फल न देने की अवस्था हूँ। .....

(d) बेइन्द्रिय जीव मेरा उत्कृष्ट बंध 25 सागर का करता है। .....

(e) मेरी तीनों प्रकृतियाँ भगवती सूत्र शतक 1 उद्देशक 3 में कांक्षा मोहनीय के नाम से कही जाती है। .....

(f) भगवती व पन्नवणा में मेरा अबाधाकाल नहीं बताया है। .....

(g) मेरा उत्कृष्ट विरह 12 दिन का है। .....

(h) मेरा जघन्य विरह 6 माह का है। .....

(i) मैं असंख्यात का दूसरा भेद हूँ। .....

(j) मैं 12 हजार योजन परिमाण का पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में स्थित हूँ। .....

प्र. 5 एक–दो पंक्ति में उत्तर दीजिए– 9X2=18

(a) विरह को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

(b) विकलेन्द्रिय जीवों की कुल कोड़ी लिखिए।

.....

.....

.....

(c) पाँच स्थावर का स्वभाव लिखिए।

.....

.....

.....

(d) पहली नारकी के नेरिये किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

.....

.....

.....

(e) वनस्पतिकाय से संबंधित भाव दिशाएँ कौन–कौन सी है?

.....

.....

.....

(f) सुरभिगंध को समुच्चय जीव जघन्य कितना बांधता है?

.....

.....

.....

(g) बादर के पर्याप्त, बादर के अपर्याप्त, समुच्चय बादर में योग लिखिए।

.....

.....

.....

(h) अवधिदर्शनावरणीय कर्म की संज्ञी पंचेन्द्रिय जघन्य व उत्कृष्ट कितनी स्थिति बांधता है?

.....

.....

.....

(i) प्रतिपतित समदृष्टि में बासठिया लिखिए।

.....

.....

.....

प्र. 6 तीन–चार पंक्ति में उत्तर दीजिए– (कोई आठ) 8X4=32

(a) आवश्यक निर्युक्ति के आधार पर 1 मुहूर्त्त में बताये गये भवों को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) असुर कुमार देव किस दिशा में थोड़े व किस दिशा में अधिक हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

(c) श्रावक का उत्कृष्ट विरह कितना व किस प्रकार होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

(d) चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण का विरह बताते हुए पूर्ण स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव गोत्र व अन्तराय कर्म की प्रकृतियों की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति कितनी बांधता है व उनका अबाधाकाल कितना होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

(f) रति मोहनीय, स्त्रीवेद, असाता वेदनीय को समुच्चय जीव जघन्य व उत्कृष्ट कितना बांधेगे?

.....

.....

.....

.....

.....

(g) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त अवस्था में भी शाश्वत होने का क्या कारण है?

.....

.....

.....

.....

.....

(h) 98 बोलों में से 82 वें बोल से 90वें बोल तक की अल्पबहुत्व व बासठिया लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) 97 वाँ व 98 वाँ बोल में अल्पबहुत्व की अपेक्षा से तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....